

बिना पानी सब सून

जल बचेगा
जीवन बचेगा

बिजली बचेगी
धन बचेगा

रमेश गोयल

लक्ष्मी फास्ट फूड एंड डेस्टोरेड



Hari Singh Halwai



Lakshmi Prajapat



Shree Ram, 93542-10049

Near L.I.C. Building, Old Civil Hospital Road, SIRSA Email : laxmisweets@gmail.com
Ph. 01666-231631, 225428, Cell : 94160-49631, 98130-40301

एक था राजा एक थी रानी। कल ना कहना एक था पानी।

अपनी बात

विद्यार्थी काल में संघर्षमय जीवन जीना एक अनिवार्यता थी परन्तु शिक्षक वर्ग के स्नेह व मार्गदर्शन से समाज व देश के बारे में चिन्तन की शुरुआत हुई। इसी कड़ी में विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से समाज से जुड़ते हुए काम करने का प्रयास किया। निरन्तर पानी व बिजली की समस्या को पढ़ते पढ़ते यह मन बना कि देश और समाज की इन ज्वलंत समस्याओं के विषय में जागृति अभियान चलाया जावे और 'जल-विद्युत बचाव अभियान' को एक मिशन के रूप में लेते हुए कार्य आरम्भ कर दिया। शिक्षण संस्थानों में प्रार्थना सभा में जाकर यह बताना कि पानी का महत्व क्या है, हम कैसे इसे बर्बाद करते हैं और बचाव की आवश्यकता क्यों है तथा इसे कैसे बचाया जा सकता है, दिनचर्या का भाग बन गया। इस अभियान में अब तक लगभग 70000 से अधिक विद्यार्थियों को यह संदेश प्रत्यक्ष रूप से दे चुका हूँ। धार्मिक व सामाजिक आयोजनों के माध्यम से भी जनता को इस दिशा में जागरूक किया है। परिवारों तक संदेश पहुंचाने के लिए एक विज्ञापित तैयार की जो विद्यार्थियों के माध्यम से उनके परों तक पहुंचाई गई और अब तक 80 हजार विज्ञापित प्रकाशित हो चुकी हैं। सन्देश व प्रेरणा को रखाई बनाने के लिए 2' X 3' के फ्लैक्स तैयार करवाकर सार्वजनिक स्थानों (विद्यालयों, मन्दिर, बैंक, कार्यालयों आदि) पर लगाने शुरू किए और अब तक 200 से अधिक स्थानों पर यह लगा चुके हैं और यह प्रयास मिशन रूप में निरन्तर जारी है। इस अभियान में भारत विकास परिषद् के साधियों का विशेष सहयोग मिला जिनमें श्री डी एन अग्रवाल का नाम सर्वोपरि है। मीडिया के साधियों का भी सहयोग के लिए धन्यवादी हूँ। मैं आभारी हूँ आदर्शपूर्ण श्री पूरन मुदगल का, जिनका स्नेह, धार व मार्गदर्शन विद्यार्थीकाल से मुझे प्राप्त हुआ और आज तक प्राप्त है। मैं अपने माता पिता के साथ साथ प्रथम प्रेरणा स्रोत के रूप में उनका सर्वदा ऋणी रहूंगा।

आप सबसे आग्रह है कि पुस्तिका में सजोशी जानकारी पढ़कर उसका अनुकरण करे, अन्यो को पढ़ाये व प्रेरित करे तथा देश और समाज की इन ज्वलंत समस्याओं, जिनसे हमें प्रतिदिन जूझना पड़ता है, को कम करने में सहयोग करे और मुझे इस मिशन को आगे बढ़ाते रहने के लिए प्रेरणा व उत्साह प्रदान करे। पुस्तिका में दी गई जानकारी / आंकड़े पूर्णरूपण सही हों, यह ध्यान रखा गया है फिर भी मुदगल अथवा अन्य किसी त्रुटि के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

अनर्हदीय जल बिरास

22 मार्च 2010

—रमेश गोयल

जल-विद्युत बचाव

बूंद-बूंद से बनता सागर

यू तो देश में बहुत समस्याएँ हैं जिनको दूर करने के लिए सरकार व कुछ व्यक्ति तथा सामाजिक संस्थाएँ निरन्तर प्रयासरत हैं और समय-समय पर जनहित में उन समस्याओं के समाधान के तौर-तरीके भी बताये जाते हैं परन्तु बहुत कम लोग हैं जो उन पर कार्य करके देश व समाज के बारे में सोचते हैं। सामान्यतः हर आदमी एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है और यही कहना है कि भरे अकेले के प्रयास करने से देश की समस्या कम होते वाली नहीं है परन्तु



याद रखें कि बूंद-बूंद से ही सागर बनता है। हमारा भी देश व समाज के प्रति कुछ कर्तव्य है जिसे निभाकर हम अपना व अपनी आने वाली पीढ़ी का भला कर सकते हैं। हम जानते हैं कि पूरे विश्व में पानी व बिजली की कमी सबसे बड़ी समस्या है जिसे जानते हुए भी हम उदासीन बने हुए हैं और प्रतिदिन पानी व बिजली की बर्बादी करते हैं। अपना वंश चलाने के लिए इन्सान क्या क्या नहीं करता और एक हम है कि पानी को बर्बाद करके अपनी आने वाली पीढ़ी को धर संकट में डाल रहे हैं। कभी सोचा है कि हमारे नाती पोते बिना पानी के कैसे जीवित रह पायेंगे? हम उनके लिए धन सम्पत्ति तो जोड़ रहे हैं परन्तु जीवन के लिए अमूल्य पानी को बर्बाद कर रहे हैं। पानी किसी फेंकट्टी में नहीं बनता जो पैसे से खरीदा जा सके, यह तो केवल प्रकृति की देन है। हमारे जीवन में धन से अधिक पानी का महत्व है। यदि हम इसे गम्भीरता से लें और पानी बर्बाद न करें तो पानी की कमी को बहुत कम किया जा सकता है।

मनुष्य का शरीर व पानी

मनुष्य के शरीर में साइज अनुसार 55 प्रतिशत से 78 प्रतिशत पानी है। निर्जलीकरण (dehydration) से बचने के लिए शरीर को एक लीटर से 7 लीटर पानी प्रतिदिन आवश्यक है जो कार्य, तापमान, वायु दबाव, आर्द्रता व अन्य कारणों पर निर्भर करता है। इसकी काफी मात्रा पानी के सीधे प्रयोग की बजाए भोजन व beverages से पूरी हो जाती है। यह स्पष्ट नहीं है कि स्वस्थ मनुष्य को

कितना पानी पीना आवश्यक है जबकि अधिकांश विद्यार्थानुसार निर्जलीकरण सेकने के लिए 6-7 गिलास पानी आवश्यक है। नेशनल रिसर्च कौंसिल के फूड एंड न्यूट्रिशन बोर्ड की 1945 की रिफाशिंग अनुसार भोजन की प्रति कैलोरी के लिए एक मिली लीटर पानी की आवश्यकता होती है। यूनाइटेड स्टेट्स नेशनल रिसर्च कौंसिल की लार्जा.रिपोर्ट अनुसार (खाद्य पदार्थों से मिले पानी की मात्रा सहित) पुरुष को 3.7 लीटर व महिलाओं को 2.7 लीटर पानी चाहिए।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2004 के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता। मू व जल वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियों के अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन से मू-जलस्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में तीसरा विश्वयुद्ध पानी के नाम पर ही लड़ा जाएगा। 2031 तक वर्तमान से चार गुणा अधिक पानी की आवश्यकता होगी। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। पानी के लिए लड़ाई गली मोहल्ले से लेकर विभिन्न देशों तक अक्सर देखी गई है। फंजाब-हरियाणा, कर्नाटक-तमिलनाडु, हरियाणा-दिल्ली जैसे प्रांतों का पानी के लिए आपसी तनाव जग जाहिर है। बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में बहुत पानी बरबाद करते हैं। हवा, पानी, मिट्टी आदि प्रकृति की देन है। भारत में जल संकट को दूर करने के रास्ते में चार मुख्य चुनौतियाँ हैं - 1. सार्वजनिक सिंचाई नहरों की क्षमता में बढ़ोतरी, 2. कम हो रहे भूमि जल संग्रह को पुनः संग्रहीत करना 3. प्रति यूनिट पानी में फसलों की उत्पादकता में वृद्धि 4. भूमिगत और भूमि के ऊपर जल स्रोतों को नष्ट होने से बचना। विख्यात जल विशेषज्ञ प्रो० अशित बिस्वास के अनुसार 'शीते दो सौ वर्षों के मुकाबले आने वाले 20 वर्षों में जल प्रदूषण की आवश्यकता अधिक होगी। अगर हम पानी की बचत नहीं करेंगे तो 'बिना पानी सब सून' अनुसार एक दिन ऐसा आएगा कि पानी के बिना हम तड़कने लगेंगे। किसी शहर या गांव में सभी मिलकर यदि यह संकल्प कर लें कि हम पानी को बरबाद नहीं होने देंगे तो वहां कमी भी पानी की कमी नहीं होगी।

प्रसन्नता का विषय है के हमारे साधु समाज व संतजन, जो केवल कथावाचन व प्रवचन ही करते थे, ने राष्ट्रीय व सामाजिक समस्याओं की ओर ध्यान देना आरम्भ किया है। स्वामी रामदेव ने स्वस्थ जीवन जीने के लिए योग के प्रकार प्रसार के साथ आयुर्वेद को पूरे विश्व में स्थापित किया है वहीं जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामहोदयवर अवधेशानन्द गिरिजी ने पर्यावरण तथा जल संसाधन जैसे विषयों पर

जल ही जीवन है

'जल ही जीवन है' जल है तो कल है' जैसी लोकोक्तियों-नारे हम प्रतिदिन पढ़ते-सुनते हैं परन्तु इनके अर्थ की ओर कभी ध्यान नहीं देते। कभी यह जानने का प्रयास नहीं करते कि बिना जल 'कल' क्या नहीं होगा या जल ही जीवन कैसे है क्योंकि आम धारणा है कि जल प्रकृति की देन है और अथवा मात्रा में उपलब्ध है। ये दोनों बातें सत्य हैं। पानी किसी फँटरी या प्रयोगशाला में नहीं बनाया जा सकता बल्कि केवल प्रकृति द्वारा ही प्रदत्त है और इतनी बड़ी मात्रा में उपलब्ध है कि इसमें पूरी धरती डूब जाए-युष्टि का विनाश हो जाये। कुल धरातल के लगभग 70 प्रतिशत भाग में जल है। पानी की अधिकता के कारण ही बड़े-बड़े शहर थोड़े में परिवर्तित हुए हैं। बाढ़ के समय चारों ओर पानी के कारण ही हाहाकार होता है और फिर भी बाढ़ से थिरे व्यक्ति पास के कारण छटपटते हैं। वर्षा होने पर नगर गांव की गलियों में पानी-पानी होता है फिर भी पीने के पानी की अलग आवश्यकता होती है यानि हर प्रकार का पानी पीने योग्य नहीं है, जीवन रक्षक नहीं है। जल भू वैज्ञानिकों के अनुसार कुल उपलब्ध पानी का केवल 1 प्रतिशत से कम पानी ही पीने योग्य है यानि एक हजार लीटर में 3 से 7 लीटर पानी ही जीवन रक्षक है शेष पानी खारा व गन्दा है। पानी की महत्ता वास्तव में उस समय पता चलती है जब हमें बहुत प्यास लगी हो और पीने का पानी आस पास उपलब्ध न हो। तब हम दो बूंद पानी के लिए ही छटपटाने लगते हैं और ऐसा लगता है कि यदि तुरन्त पानी न मिला तो हमारे प्राण संकट में पड़ जायेंगे और इसी कारण से कहा जाता है कि जल ही जीवन है। पानी के लिए झगड़े गली मोहल्लों के सार्वजनिक नलों पर सामान्य बात है परन्तु यह सब यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि हरियाणा पंजाब प्रान्तों का जल विवाद भाखड़ा-व्यास जल बंटवारे के लिए चल रहा है। दिल्ली हरियाणा के यमुना जल विवाद में उच्चतम न्यायालय ने कई बार निर्देश दिए हैं। कर्नाटक-तामिलनाडु का कावेरी जल-बंटवारा विवाद वर्षों पुराना है। भारत पाक सम्बन्ध में आतंक जैसे विषयों के अतिरिक्त जल बंटवारा भी एक विषय है और जनवरी 2010 में ही पाक योजना आयोग के उपाध्यक्ष ने धमकी दी है कि यदि भारत ने जल बंटवारा सही नहीं किया तो भारत पाक के बीच युद्ध हो सकता है। युद्ध की यह बात नई नहीं है क्योंकि जल-भू वैज्ञानिकों की वेतावनीपूर्ण भविष्य वाणी अनुसार यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो वह पानी के नाम पर होगा।

जल-विद्युत बचत

5

बादल तब बरसोंगे जब हम पेड़ लगायेंगे।

विरसुत चर्चा व गहन अध्ययन आरम्भ किया है। गत उब्जौन कुंभ मेल के अखरार पर "अंतर्राष्ट्रीय जल संसद" का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 300 जल वैज्ञानिकों व चिन्तकों ने भाग लिया और दूसरी जल संसद इन्टैर में हुई और चौथी जल संसद हरिद्वार के कुंभ मेल में हरिद्वार आश्रम में प्रस्तावित है जिसमें पचास देशों से जल वैज्ञानिक व चिन्तक अपनी भागीदारी करेंगे। केंद्रीय जल संसाधन मंत्री पवन बाराल मुख्य अतिथि व न्यायमूर्ति शंभुनाथ श्रीवास्तव विशिष्ट अतिथि होंगे।

जल कैसे बचाएं

हम निम्नानुसार पानी की बचत कर सकते हैं :-

1. कभी भी नल को बिना आवश्यकता खुला न छोड़ें।
2. शैविम या फेस्ट करते या हाथ धुंते समय पानी का प्रयोग न करते समय नल बन्द कर दें। मग में पानी भरकर प्रयोग करें। यदि सम्भव हो तो पुश बटन वाली टूटी लगायें।
3. नहाते समय पानी बाल्टी भर कर ही प्रयोग करें व बाल्टी छोटे साइज की प्रयोग करें। दिन में एक बार से अधिक न नहाएं।
4. कपड़ों को मशीन में नही बाल्टी में खंगालें।
5. किसी पाईप में रिसाव हो तो उसे तुरन्त ठीक करायें।
6. पानी की टकी/कूलर आदि में गुंवार लगावायें ताकि टकी भर जाने पर पानी बाहर न निकले।
7. वर्तन साफ किए हुए टब के पानी व कपड़े खंगाले हुए पानी को फेंकें व बगीचे में या अन्यथा काम में लें।
8. मिट्टी वाले सामान/स्थान को पहले झाड़ फेंक लें फिर गीले कपड़े से साफ करें।
9. घरों में फर्श धोने की बजाए केवल पोचा लगाकर ही साफ करें। पाईप से फर्श कभी न धोएं।
10. यदि कहीं कोई सार्वजनिक नल खुला देखे तो उसे तुरन्त बन्द कर दें।
11. पाईप लगाकर फर्श व अपने बाहनों को न धोएं, पशु न नहलाएं।
12. अनावश्यक छिड़काव बिलकुल न करें तथा पीने वाले पानी से पशु न नहलाएं।
13. आर आं द्वारा निकाला गया पानी भी बेकार न जाने दें।
14. फेंकों को आवश्यकता अनुसार पाईप की बजाए बाल्टी या फव्वारा से ही पानी दें।
15. सिंचाई के लिए फव्वारा/ड्रिप तकनीक (शिथिलिस्तर सिस्टम) अपनाना।
16. वर्षा जल संग्रहण तकनीक अपनाएं तथा गांव के तालाब में पानी एकत्रित करें। स्वयं करें, परिवार व नीकर को समझाएं, समाज को जगार्ने, देश बचाएं।

जल-विद्युत बचत

4

जो नहीं बचाया पानी, तो कल याद आणी नानी ।

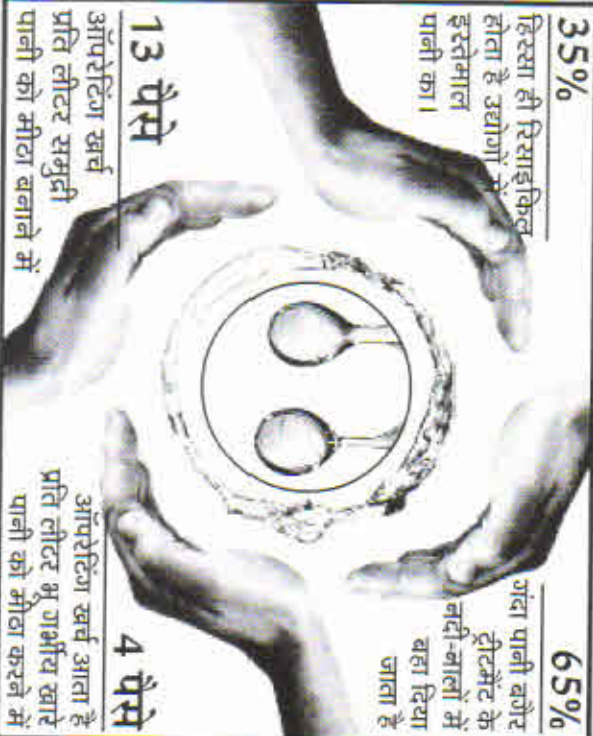
जल बचाएं जीवन बचाएं

35%

हिस्सा ही रिसाइकिल होता है उद्योगों से इस्तेमाल पानी का ।

65%

जंदा पानी बगैर ट्रीटमेंट के नदी-नालों में बहा दिया जाता है



13 पैसे

ऑपरेटिंग खर्च प्रति लीटर समुद्री पानी को मीठा बनाने में

4 पैसे

ऑपरेटिंग खर्च आता है प्रति लीटर भू गर्भीय खारे पानी को मीठा करने में

विवेकानन्द वरिष्ठ सांख्यिक विद्यालय

(प्ले स्कूल से 12वीं कक्षा तक)

राजिया मार्ग, सिट्टसा

संपर्क :- 01666-241012, 94161-24924, 98128-00555

जल-वियत बचत

6

हर साथी एक पेड़ लगाए, उमड़ घुमड़ कर वर्षा आए ।

नदी प्रदूषण

पानी को गन्दा न करके भी हम बचता कर सकते हैं। गन्दा व खारा पानी अनुपयोगी होता है। नदी व नहरों में कूड़ा कर्कट, सीवर का पानी, उद्योगों के कैमिकल्स युक्त पानी आदि को नदी में डालने से पानी गन्दा होता है और पीने व खेती योग्य पानी की कमी होती है। गंगा जैसी पवित्र नदी की भी आज दुर्दशा है और अमृत तुल्य जल विधाणु युक्त हो रहा है। यमुना तो दिल्ली पहुंचकर गन्दा नाला ही बन गई है। वृन्दावन, मथुरा, आगरा व उसके बाद उसकी स्थिति बददूर नाले जैसी होती जा रही है। यम तेशी गंगा मैती के साथ यमुना भी यम की प्यारी हो रही है। यही स्थिति अन्य नदियों की भी है। प्रगति के नाम पर हम स्वयं स्वार्थवश गलत कार्य करते हैं और परिणाम स्वरूप नई समस्याएं पैदा कर लेते हैं जो जीवन के लिए घातक हैं। गंगा को राष्ट्रीय नदी सरकार द्वारा घोषित करवाने में जहां आचार्य जितेन्द्र जी का बहुत योगदान है वहीं गंगा सफाई अभियान को देश के बहुत बड़े राष्ट्र समाला ने अपना मिशन बनाया है। इसी प्रकार आर्ट आक निविम के संस्थापक संघालक श्री श्रीरथेशकरजी ने यमुना की सफाई का आवाहन किया है। देश की सभी नदियों को प्रदूषण मुक्त कसाने की आवश्यकता है। तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने कहा था "यदि तीर्थराज प्रयाग के संगम स्थल पर देश के सन्त महात्मा आचमन तक करने से नंगा कर दें तो समझ लीजिए देश के दुर्दिन आने वाले हैं" और वर्तमान स्थिति उसी ओर आगे बढ़ी है। समुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट अनुसार इन नदियों में पाए जाने वाली सीसे(लेड) की मात्रा औद्योगिक देशों की नदियों में पाये जाने वाले सीसे की मात्रा से 20 गुणा अधिक है।

उद्योगों से उत्पादन अथवा उनमें प्रयुक्त रसायन क्लोरीन, अमोनिया, हाईड्रोजन, अम्ल, पात्र आदि विषैले पदार्थ जल को विषाक्त बनाते हैं। पानी में जहरीला सीसा व ताम्बा होता है। इस दिशा में शोध कार्य करने के लिए पर्यावरण इंजिनियरिंग के भारतीय छात्र प्रयुक्त वर्टजी को अमेरिका का शीर्ष शोध सम्मान सी एलेन गॉन्टर एन्वायरमेंटल कैमिस्ट्री अवार्ड अमेरिकन कैमिकल सोसायटी द्वारा वॉरटन में अगस्त 2010 में दिया जाएगा।

समुद्र स्वारा क्यों है।

नदियों के बहाव में घट्टानों के खनिज नमक मिल जाते हैं और समुद्र का पानी जब वाष्प बनकर उड़ता है तो यह क्षारीय नमक पदार्थ समुद्र में ही रहता है वाष्प नहीं बनता। इसलिए पानी अधिक खारा होता जाता है।

जल-वियत बचत

7

भूजल दोहन

सैनट्रल ग्राऊंडवाटर अथॉरिटी की एक रिपोर्ट अनुसार प्राचीन भारत में सिंचाई हेतु 50 प्रतिशत जल तथा 80 प्रतिशत पेयजल 30 लाख हैडपम्प / पम्पिंग संस्थानों से निकाला जाता है।

नदी-नहर द्वारा पानी उपलब्ध न होने पर भू-जल का दोहन नलकूपों द्वारा किया जाता है और जल का महत्व न जानते हुए पानी बर्बाद करते हैं। अकेले हरियाणा प्रान्त में नलकूपों की संख्या 6 लाख से अधिक है पंजाब में यह संख्या और अधिक है। हर पांच वर्ष में भू-जल स्तर लगभग एक मीटर और नीचे चला जाता है। गूजल दोहन के कारण हरियाणा प्रान्त के कुल 119 खंडों में 55 जार्क (खतरनाक स्थिति) जोन में है जबकि 43 में स्थिति विताजनक है। अधिक दोहन का एक कारण धान की खेती भी है। धान का क्षेत्र पिछले 4 दशकों में दस गुणा से भी अधिक बढ़ा है जिसे पानी की अत्यधिक आवश्यकता रहती है और गूजल स्तर सर्वाधिक उसी क्षेत्र में गिरा है जहां धान की खेती होती है। संयुक्त राष्ट्र की पर्यावरण सम्मन्धी रिपोर्ट अनुसार अधिकांश नगर भूमिगत जल पर आश्रित होते जा रहे हैं। रिपोर्ट अनुसार कोलकाता में 1300 वीरिंग से जल निकासी के कारण जल स्तर 40 मीटर तक नीचे गिरा है। दिल्ली में भी जल स्तर खतरों के विन्दु से भी अधिक गिर चुका है।

तम्बाकू की खेती अधिक पानी की खपत वाली है और तम्बाकू से बनने वाले बीड़ी, सिगरेट, गुटका आदि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इसी प्रकार गन्ने की खेती के लिए भी बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। गन्ने से बनी चीनी मोटापे व अन्य बिमारियों को निम्नन्त्रण देती है। सरकार को इन दोनों फसलों पर नियन्त्रण करना चाहिए जिससे बिमारियों से छुटकारा मिलेगा और पानी की बड़ी मात्रा में बचत होगी।

अकेले अमेरिका में मांस साफ करने के लिए अरबों लीटर पानी खर्च होता है। अधिक मांस प्राप्त करने के लिए गाय व सुअर को अधिक अनाज खिलाया जाता है जिसके कारण बहुत बड़ी मात्रा में अनाज भी बर्बाद किया जा रहा है। भारत में भी हजारों कल्लगाहों में इसी प्रकार वर्ष भर में अरबों लीटर पानी बर्बाद किया जाता है।

पीने के पानी का यह संकट दिन प्रतिदिन गहराता जा रहा है। छोटे स्थानों की अपेक्षा महानगरों में बहुत विकट परिस्थितियां हैं। दिल्ली को प्रतिदिन 1950 मिलियन गैलन पानी चाहिए किन्तु दिल्ली जल बोर्ड 850 मिलियन गैलन

पानी ही उपलब्ध करा पाता है। दिल्ली में 8000 लीटर पानी निशुल्क दिया जाता था जिसे प्रथम जनवरी 2010 से शून्य कर दिया गया है तथा पानी दर पहले से 3 गुणा कर दी गई है और 31 जनवरी तक पानी मीटर लगवाने अनिवार्य कर दिए गए। कार धोने पर जुमाने का प्रावधान भी किया गया है। मुम्बई में अक्टूबर-नवम्बर 2009 में पानी सस्ताई में 30 प्रतिशत कटौती की गई थी जो समय समय पर बढ़ाई भी जाती है।

अन्य प्रान्तों में भी स्थिति गम्भीर है। दूसरी ओर पानी की खपत 1950 के मुकामवले 3 गुणा से अधिक बढ़ी है और अगले दो दशकों में यह खपत वर्तमान से 40-50 प्रतिशत अधिक सम्भावित है। वर्षों के पानी का एकत्रिकरण व रियाजिंग भूजलस्तर सुधारने के लिए आवश्यक प्रयास किया जाना चाहिए। जल संसंधनों के प्रबन्धन में तापरावही व आनदेखी भविष्य को बड़े संकट में डाल सकती है। उत्तरप्रदेश के लखनऊ तथा कानपुर के मध्य 80 कि.मी. लम्बी एक ऐसी पट्टी है जिसमें जल स्तर बहुत अधिक गिर चुका है और प्रतिवर्ष 2-3 फुट निरन्तर गिर रहा है।

गूजल स्तर गिरने से भूमि के नीचे एक खाली स्थान बन जाता है जिसके कारण आजकल भवनों के धंसने की घटनाएं होने लगी हैं। यदि स्थिति नियन्त्रित नहीं की गई तो भविष्य में ऐसी घटनाएं बढ़ती जाएंगी जो एक अलग भयावह परिणति होगी।

जल चक्र (Water Cycle)

Water cycle (जल चक्र) को हाइड्रोजिक साइकिल के नाम से भी जाना जाता है जो पानी के भूमि पर, ऊपर व नीचे के निरन्तर बहाव को प्रदर्शित करता है। जल चक्र वास्तव में ऐसा चक्र है जिसका आदि व अन्त नहीं है। पानी अलग अलग स्थानों पर तरल, वाष्प व बर्फ के आकार में परिवर्तित हो सकता है। हम जल को साफ करके पुनः प्रयोग कर सकते हैं।

दिल्ली में बसईं दारापुर स्थित हडा, हससताल में एफ्ल्यूएट ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किया गया है। इसके द्वारा हससताल में उपयोग हो चुके पानी का शोधन कर उससे पौधों की सिंचाई की जाती है।

दिल्ली में पौधों की सिंचाई में पानी की कमी दूर करने के लिए व्यवस्था की गई है। अमोलो हससताल में भी ऐसी व्यवस्था है।

उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम ने 40 लाख की लागत से प्लांट बनवाया है जिसे जनवरी 2010 में आरम्भ किया गया है जिससे पेड़ पौधों की सिंचाई के लिए पानी मिल जाता है जो पहले उपयोग के बाद बेकार चला जाता था परन्तु अब पुनः प्रयुक्त हो जाता है।

कैसे बर्बाद करते हैं जल

- जीवन रखक अप्रत्यय पेय को हम प्रतिदिन बड़ी निदर्यता व लापरवाही से प्रातः उठने से रात्रि सोने तक बर्बाद करते हैं। अलग अलग परिवार, व्यक्ति, स्थान के विभिन्न प्रकार हो सकते हैं परन्तु पानी बर्बादी के कुछ सामान्य कारण निम्नलिखित हैं—
1. शौचालय (टायलेट) से बाहर हाथ धोने के लिए खोली गई ट्यूटी को हम हाथ धोने के बाद बन्द करते हैं। हाथ गीला करने के बाद साबुन लगाने व हाथ मलते समय ट्यूटी का पानी नाली में बहता रहता है और हाथ गीला करने व धोने के बीच 1-2 मिनट में जितना पानी नाली में बह गया उसका कोई उपयोग नहीं हुआ अर्थात हाथ गीला करके ट्यूटी बन्द कर दें और साबुन लगाने व मलने के बाद ही पुनः ट्यूटी खोलें।
 2. दंत मंजन—पेस्ट करते समय बुश गीला करने के लिए ट्यूटी खोलते हैं जो कुल्ला करने बाद ही बन्द करते हैं और इस मध्य पानी व्यर्थ बहता रहता है। प्रतिदिन हम इस प्रकार बहुत पानी बर्बाद करते हैं। कुछ सज्जन पुरुष शैव करते समय बुश भिगोकर ट्यूटी बन्द करने में अपना समझते हैं और शैव करने के बाद बुश आदि धोकर ही ट्यूटी बन्द करते हैं यानि प्रतिदिन 8-10 मिनट या अधिक ट्यूटी को बंदकार चलाए रखते हैं। मंजन—पेस्ट व शैव करते समय हमेशा मग में पानी लेकर प्रयोग करें।
 3. स्नानघर में ट्यूटी बाल्टी में खोलकर नहाने लगते हैं और साबुन लगाते व शरीर मलते समय बाल्टी भरकर पानी नाली में बहता रहता है और हम ट्यूटी बन्द करने का कष्ट नहीं करते। हम नहाने में केवल एक-दो बाल्टी ही काम लेते हैं परन्तु नाली में 5-10 बाल्टी पानी व्यर्थ चला जाता है। थोड़ा सा ध्यान रखकर बहुत पानी बर्बाद होने से बचाया जा सकता है। कभी ट्यूटी के नीचे बैठकर न नहयें।
 4. कूलर में पानी भरते समय सामान्यतः पाईप लगाकर अन्य कार्य करने लगते हैं और कूलर भर जाने के बाद पानी फर्श पर बहता रहता है। यदि कूलर में गुबारा लगाकर या ध्यान रखकर पानी भरा जाए तो 10-20 बाल्टी अकारण बहने वाले पानी की बचत की जा सकती है।
 5. सिक में बर्तन साफ करते समय खोली गई ट्यूटी अन्त तक चलती रहती है जबकि बर्तनों पर साबुन/पाउडर लगाते समय पानी की आवश्यकता नहीं होती। टब में बर्तन साफ करते हुए भी ट्यूटी निरन्तर व बिना आवश्यकता नहीं चलानी चाहिए।

6. कपड़े मशीन में धोने के बाद बाल्टी में खगालने के स्थान पर मशीन में सीधे पाईप लगाकर खगालने से 20-30 बाल्टी पानी अधिक खर्च होता है। कपड़े बाल्टी में ही खगालें। सरकार को ऐसी स्वचालित मशीनों के निर्माण पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।
7. धरों में पानी की टकी भरने के लिए मोटर चलाई जाती है और टकी भर जाने के बाद पानी बाहर व्यर्थ बहता रहता है और पता नहीं चलता कि कितना पानी व्यर्थ बह गया। यदि उस पानी की निकाली सीवर में न हो तो पानी गली बाजार में डककटा हो जाता है जो कभी कभी पड़ोसियों से लड़ाई का कारण भी बनता है इसलिए टकी में गुबारा अवश्य लगावयें ताकि पानी व्यर्थ न बहे।
- याद रखे की आप जितना पानी अधिक बर्बाद करेंगे उतनी मोटर अधिक चलानी पड़ेगी और आपका बिजली बिल भी अधिक आएगा तथा बिजली की कमी बढ़ेगी।
8. कार, स्कूटर, साइकिल या अन्य वाहन पाईप लगाकर धोते समय अकारण पानी बहता रहता है। दिल्ली सरकार ने पाईप से वाहन धोने पर जुर्माने का प्रावधान कर दिया है। वाहन कपड़ा गीला करके भी साफ किया जा सकता है।
9. पशुओं को नहलाने के लिए जोहड़ का ही प्रयोग करें और यदि घर पर ही नहलाना हो तो पाईप लगाकर नहीं बल्कि बाल्टी में पानी लेकर भरा भरकर नहलाए। पीने के पानी से पशु नहीं नहलाना चाहिए। सम्भव हो तो पशु खेत या बगीचे में नहलायें ताकि उस पानी का उपयोग सिंचाई के लिए हो जाये।
10. पाईप लगाकर फर्श धोते समय बहुत पानी बर्बाद होता है। झाड़ू लगाकर घोबे से फर्श साफ करना चाहिए। गर्मी में कई स्थानों पर आन्धी के कारण फर्श पर मिट्टी—रेत इकट्ठी हो जाती है उसे भी झाड़ू से साफ करें। यदि फर्श धोना अनिवार्य है तो पाईप की बजाए बाल्टी व मग से धोएं इससे पानी की खपत कम होगी।
11. बहुत लोगों को (विशेषकर गांव करबों व छोटे शहरों में) छिड़काव करने की आदत होती है। घर टुकान के आगे पक्की सड़क होने पर भी प्रतिदिन छिड़काव अवश्य करते हैं। वे यह नहीं जानते कि लुक से बनी सड़क पर पानी डालने से सड़क जल्दी टूट जाती है। अनावश्यक छिड़काव न करें।
12. मिट्टी से भरी बरतु को धोने से पानी बहुत लगता है उसे भी झाड़ू पोछ कर गीले कपड़े से साफ करना चाहिए।

आज बचाओ पानी, तो कल चलेगी जिन्यानी।

13. वर्तन कम से कम प्रयोग करने चाहिए ताकि उन्हें साफ करने में काम पानी प्रयुक्त हो। यदि पौछने से काम चलता हो तो धोना नहीं चाहिए।
 14. कपड़े अधिक समय पहनकर आवश्यकता अनुसार ही धोने चाहिए।
 15. पीने के पानी वाले घड़े या कैम्पर को साफ करते समय उसमें जो पानी होता है उसे नाली में न डालकर बाल्टी में निकालें और आवश्यकता अनुसार प्रयोग करें।
- अन्य विभिन्न प्रकार से भी आप पानी बर्बाद करते होंगे जिस पर आप स्वयं चिन्तन करें और पानी बर्बाद न होने देने का संकल्प करें तथा प्रयास करें कि देश, समाज और परिवार की समस्या को कम करने में सहयोग करेंगे।

जल बचत मेला

गावों व शहरों के हर मोहल्ले में पानी सम्बन्धी पूर्ण जानकारी देने, उसके महत्व, बर्बादी के कारण, विविध की समस्या, बचत के उपाय व आवश्यकता तथा जल के सही उपयोग सम्बन्धी मेले सरकार व संस्थाओं द्वारा मिलकर आयोजित किए जाने चाहिए और जनता को पूरी समरथा से अवगत कराना चाहिए। जनता को दैनिक जीवन में घर में प्रातः से रात्रि तक पानी के भित्तव्ययी प्रयोग के अतिरिक्त खल खलिहान में सिंचाई योग्य पानी के सही प्रयोग, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली की जानकारी विस्तार से दी जानी चाहिए। जल ससंभर्न की परम्परा विस्तार व प्रयोग की जानकारी उपलब्ध हो। पानी को प्रदूषण से बचाने, पीने योग्य बनाने व घर तक पहुंचाने वाले खर्च का भी प्रचार हो ताकि पानी को मुफ्त का माल समझने वाली जनता को सही ज्ञान हो सके। 24-29 मार्च 2008 को तत्कालीन मुख्यमन्त्री वसुन्धरा राजे के नेतृत्व में राजस्थान राज्य जल संसाधन योजना विभाग द्वारा एक ऐसा आयोजन किया गया था जो अनुकरणीय है तथा पूरे देश में स्थानीय प्रशासन, समाज सेवा संस्थाओं व राज्य सरकार के सम्बन्धित विभाग द्वारा समय समय पर आयोजित किए जाने चाहिए।



आज समय की यही पुकार, बच्चे दो और पेड़ हजार।

पानी की कमी

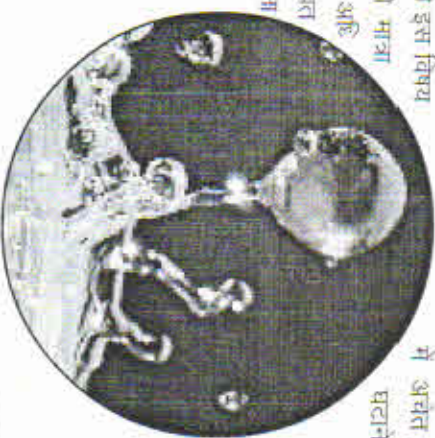
पीने योग्य पानी हर स्थान पर उपलब्ध नहीं है और खास पानी पिया नहीं जा सकता। अनेक शब्दों के गावों करवों व नगरों में बाल, वृद्ध व महिलाओं को भीलों चलकर पीने का पानी लाते हुए देखा जा सकता है। वे औरतन प्रतिदिन 6 किलोमीटर चलती हैं। इस प्रकार पानी लाने वाली महिलाएँ कई बार बलत्कार का शिकार होती हैं। पूरे देश में ऐसी स्थिति है। बोतल बन्द पानी हर स्थान पर उपलब्ध हो रहा है परन्तु वह केवल घनाढ्यो का नोयला है। यही स्थिति रही तो यह पानी भी 10-12 रुपये प्रति लीटर की दराज 100-150 रुपये या अधिक कीमत पर मिलने लगेगा। अरब देशों में पानी की कमी के कारण पानी बहुत महंग और पेट्रोलियम उत्पाद सबसे हैं परन्तु भारत में पानी महंगा हुआ तो पानी व पेट्रोलियम दोनों ही महंगे मिलेंगे।

संसार की 18 प्रतिशत जनसंख्या यानि लगभग एक अरब दस करोड़ से अधिक लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध नहीं है। विकासशील देशों में प्रतिवर्ष 22 लाख लोग, जिनमें बच्चों की संख्या अधिक है, स्वच्छ पेयजल की कमी के कारण मर जाते हैं।

स्वच्छ जल की अनुपलब्धता कई क्षेत्रों में तनाव उत्पन्न कर रही है। उत्तरी अफ्रीका और पश्चिमी एशिया में स्थिति गम्भीर हो चुकी है। संसार की लगभग दो तिहाई आबादी उन देशों में रह रही है जहाँ पानी की बहुत कमी है।

सरकारी विभाग की लापरवाही भी पानी की कमी के लिए उत्तरदायी है। मुम्बई में 120 किलोमीटर लम्बी पाईप लाईन में अनेक स्थानों पर दशकों से लीकज है परन्तु नगर निगम अधिकारी इस विषय में अवगत हैं जबकि पानी की सप्लाई की मात्रा हमेशा तत्पर रहते हैं। ऐसे आदि

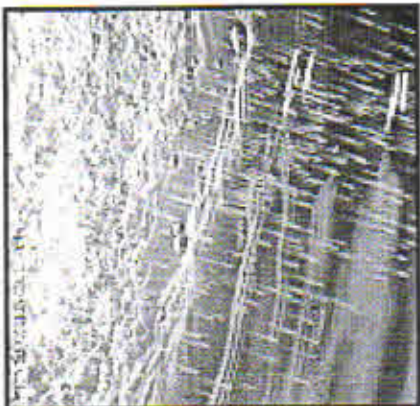
कारियों का उत्तरदायित्व निश्चित होने पर भी सुधार की कुछ सम्भावना बड़ेगी।



जल बचेगा जीवन बचेगा, बिजली बचेगी धन बचेगा।

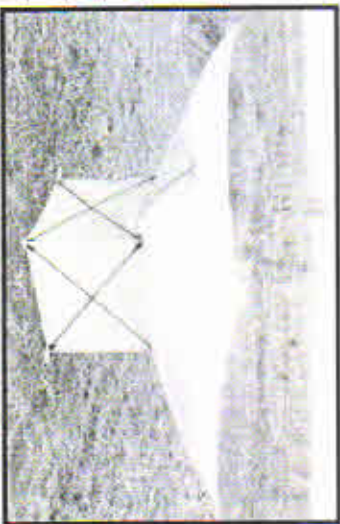
वर्षा

जनसंख्या वृद्धि, दूषित वातावरण व वायुमंडल में परिवर्तनों के कारण जल स्रोत तेजी से सूख रहे हैं। कुवंत, गाजापट्टी, अरब अशिरात, मालदीव, सिंगापुर, माल्टा आदि देशों सहित भारत में इसका सर्वाधिक प्रभाव है।



भारत में औसतन 4000 अरब घन मीटर वर्षा होती है इसमें 690 अरब घन मीटर पानी प्रयोग में लाया जा सकता है। भारत में पानी की खपत 552 अरब घन मीटर है। लगभग 100 अरब घन मीटर पानी हम झीलों और नदियों से लेते हैं शेष पानी धरती के नीचे से लेते हैं इसी कारण भूजल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है।

सपत 1530 अरब घन मीटर हो जाएगी परन्तु वर्षा के बिना हमारे पास कोई दूसरी जल संपदा नहीं है। इसलिए वर्षा की एक एक बूंद को बचाना और धरती में रिचार्ज करना ही सबसे जरूरी कार्य हो जाता है। वर्ष 2005 में अलीगढ़ में प्रकाशित समाचार अनुसार एक सप्ताह में पानी के अभाव में हजारों पक्षी मर गए। न्यायमूर्ति शामसुन्ध श्रवास्त्रव ने इसका संज्ञान लेते हुए सरकार से जानकारी ली तब यह तथ्य सामने आया कि उत्तर प्रदेश में 1952 में 392000 हैक्टयर भूमि में तालाब थे जिनमें से अधिकांश भवन, कल कारखाने या खेती में प्रयुक्त हो चुके हैं। न्यायमूर्ति श्रीवास्त्रव के आदेश पर 52200 तालाब खुदवाए जा चुके हैं तथा हर गांव में कम से कम एक तालाब सुनिश्चित करने के लिए मुख्यामन्त्री की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई है जो



जल-विद्युत बचत

14

जन-जन से यह कहना है वृक्ष धरा का गहना है।

लगभग एक लाख से अधिक और तालाब तैयार कराएगी। अन्य राज्य सरकारों को भी इसी प्रकार का प्रयास अनिवार्य रूप से करना चाहिए। वर्ष जल संग्रहण के साथ साथ पशु पक्षियों के जीवन की रक्षा भी होगी।

कृषि में पानी की खपत बहुत अधिक होती है। खारे व क्षारीय पानी के कारण उपजाऊ भूमि भी बंजर बन जाती है। खेती के लिए कम पानी से अधिक सिंचाई ही एक मात्र हल है और इसके लिए सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली (Sprinkler system) पंचारा पद्धति बहुत कारगर सिद्ध हुई है। किसानों को इसके विषय में अधिकतम जानकारी सरकार व सामाजिक संस्थाओं द्वारा दी जानी चाहिए और इस पद्धति के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अनुदान या पुरस्कार भी दिया जाना चाहिए। सूक्ष्म सिंचाई पद्धति में पर्येय विछाकर छिड़काव की तरह सिंचाई की जाती है जिससे पानी की हर बूंद का उपयोग होता है और उतना ही पानी भूमि को दिया जाता है जितनी आवश्यकता होती है। खाल बनाकर या पर्येय खुला छोड़कर सिंचाई से अत्यधिक पानी बर्बाद होता है। सरकार को इस पद्धति को अनिवार्य करने के लिए विधान बनाना व जमीना का प्रावधान करना चाहिए तथा साथ साथ अनुदान का प्रावधान करना चाहिए।

UTI collection Centre

→ UTI-Ulip

D. N. Agarwal
Chief Representative

→ Fix Deposit

→ Life Insurance

→ Mutual Fund

→ Income Tax PAN Card



142, Multani Colony, Sirsa
Ph. 231269, Cell 92152-66769

जल-विद्युत बचत

15

फिल्मी सितारों के पानी पर विचार



आभिर खान- किसी ने सच ही कहा है कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। पूरी दुनिया में पानी का स्तर नीचे जा रहा है। हमारे देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा पानी से वंचित है तो दुर्दलखण्ड आदि में सूखे के कारण किसान पलायन कर रहे हैं लेकिन फिर भी हम पानी का महत्व नहीं समझ पा रहे हैं। मैं इस मामले में बहुत सावधान रहता हूँ। यहां तक कि नहाने के लिए भी मैं बाल्टी का इस्तेमाल करता हूँ ताकि पानी बचकर न हो। नल खेलकर या शावर के नीचे नहाने से बड़ी मात्रा में पानी बह जाता है, जो कि एकदम गलत है। बाल्टी में पानी उताना ही निकालता हूँ जितना कि जरूरी हो।



जैकी श्राफ- मैंने पानी की समस्या देखी है। जब मैं मुंबई की बाल में रहता था तो पानी सुबह सात बजे आकर नौ बजे चला जाता था। उस समय आपने पानी भर लिया तो ठीक चरना फिर मांगते रहते पड़ोसी से। वहीं से मुझे पानी की बचत के साथ प्रयोग करने की आदत पड़ी है। एक बाल्टी पानी मिलता था नहाने के लिए, बस उसी में स्नान का आनन्द लेना पड़ता था। अब भी मुझे ऐसी ही आदत है। कंबल काम भर का पानी प्रयोग करता हूँ। यह पानी का दुरुपयोग ही तो है, जिसके कारण आज हमें पानी खरीदना पड़ रहा है। कई लोग कहते हैं कि हमें पानी की समस्या नहीं होने वाली तो मुझे उनकी बात सुनकर बड़ा ताज्जुब लगता है। वे अपनी आंन वाली पीढ़ी और बच्चों को क्यों भूल जाते हैं।



नेहा धूपिया- अगर कोई घर में ज्यादा नकदी रखता है तो सरकार उसके खिलाफ कार्यवाही करती है। इसी तरह लोग घरों में आवश्यकता से अधिक पानी रखते हैं और अगले दिन उसे फेंककर ताजा पानी के नाम पर दोबारा पानी भरते हैं उनके खिलाफ सरकार को एक्शन लेना चाहिए। वास्तव में होना यह चाहिए की कल के भरे पानी से कपड़े धोने आदि साफ कर लें अथवा उसे उबालकर फ्रीज या घड़ों में रखकर इसे पीना चाहिए। नहाते समय ध्यान रखें कि जब आप शरीर पर साबुन लगा रहे हैं तब कहीं बाल्टी भरकर पानी यह तो नहीं रहा है। पानी हम सबके लिए बहुमूल्य

जल-विद्युत बचत

16

है यदि इसकी बचत के लिए अपील की जाए तो दुख की बात है यह तो हमें खुद की समझना चाहिए।



उदिता गोस्वामी- मैं हमेशा ध्यान देती हूँ कि नल से कहीं पानी टपक तो नहीं रहा है। अगर ऐसा है तो उसके नीचे बाल्टी रखना कभी नहीं भूलती। वह पानी बाद में यूज करती हूँ मगर उससे पहले प्लम्बर को बुलाकर नल की लीकेज ठीक कराना नहीं भूलती। नल तभी खोलती हूँ जब जरूरी हो अन्यथा तुरन्त बन्द कर देती हूँ। मैंने देखा है कि सार्वजनिक नल अक्सर खुले रहते हैं उससे पानी टपकता रहता है लेकिन लोग यह सोचकर आगे बढ़ जाते हैं कि मैं क्यों बन्द करूँ। अगर हम इस विश्वास में रहेंगे कि ऐसा सबको करना चाहिए तो मला वह पहला शरझ कोन होगा जो पानी की अहमियत समझेगा।



इला अरुण- मैं राजस्थान से हूँ जहां लोगों को पानी की बूद बूद के लिए तरसते देखा है। यहां मुंबई में भी पानी की तंगी होने लगी है अब तो बड़ी बड़ी इमारतों में बैठे लोगों को समझना चाहिए कि उनके पास तो सभी सुख सुविधाएं हैं लेकिन बालों और शस्त्रे पर रहने वालों को पानी तक नसीब नहीं होता। पानी बचाने की कुछ बेसिक बातें हैं जो सबको पता होनी चाहिए जैसे कपड़े और बर्तनों का कम से कम इस्तेमाल करें तो उन्हें बार बार धोना नहीं पड़ेगा। गिलास में पानी आधा पीकर आधा फेंक देना समझदारी नहीं है। गार्डियों को धोने के लिए भूले कपड़े का प्रयोग करें, न कि पाइप से पानी भरें। कभी भी नल को खुला हुआ न छोड़ें और दिन में एक से अधिक बार नहाना भी पानी की बर्बादी है।



सुनील पाल- देश को आजादी मिले 60 साल से भी ज्यादा समय हो गया मगर बहुत सारे लोगों को आज भी पीने का अच्छा पानी नहीं मिल पा रहा है। यह बात अलग है कि पीने के पानी को तरस रहे उन लोगों से अपील है कि जितना हो सके पानी के खर्च को सीमित रखा जाए। बच्चे नल खोल देते हैं, जिससे पानी व्यर्थ में ही बहता रहता है। ऐसा न हो, इसके लिए बड़ों को सावधान रहने की जरूरत है। पानी यूज करने तक तो ठीक है मगर पानी का मिस यूज कर्तई नहीं होना चाहिए। पैसा पानी की तरह बहाना, यह एक कहवात है लेकिन मैं कहता हूँ कि पानी को पैसे की तरह संभाल कर

जल-विद्युत बचत

17

जल की सुंदर निर्मल धारा, इसे बचाने का करें वादा।

प्रयोग करना चाहिए।

वरुण बड़ोला— मैंने दस साल तक पानी की समस्या झेती है। दिल्ली में ग्रीन पार्क में हम जहां रहते थे, वहां पानी का साधन नहीं था या कभी पानी आता ही नहीं था। तब गाउंड फ्लोर तक वाटियां में पानी भरकर लाता था। इसलिए मुझे पानी का बेकार पियना या बहना बड़ा अखरता है। जितनी बार मुझे पानी का इस्तेमाल करना होता है उतनी ही बार जल खोलाता बन्द करवा हूँ। नहाने समय भी जब साबुन लगा रहा होता हूँ तो शावर बन्द रखता हूँ। मेरे घर के सभी लोगों की यही आदत है तो मुझमें भी यह आदत आ गई है।



राजीव खडेलवाल— जब भी मैं खेल कर या जागिंग करके आता हूँ तो पसीने से तरबतर अपनी टी शर्ट को डिटरजेंट से धोने नहीं देता हूँ। मैंने कह रखा है कि उस टी शर्ट को पानी में एक बार निचोड़कर सुखा दो और दो तीन दिन के गैप के बाद ही उसे डिटरजेंट में धोओ वह भी पानी की बचत के साथ। मेरे घर पानी रिसात नहीं है पानी की बूंदों के टपकने की आवाज भी मुझे डिस्टर्ब करती है और मैं उसे पानी की बर्बादी मानता हूँ। मैं पानी की बचत को लेकर खुद इसी तरह रहता हूँ और अपने साथ अपने घर वालों को भी एक तरह से सुधार दिया है तो मैं कह सकता हूँ कि ऐसी कोशिश सब करें तो उन लोगों को पानी मिल सकता है, जो पानी के अभाव में रहते हैं। इस प्रकार के विचार अन्य बहुत से कलाकारों के भी हैं। हमें भी इन पर विचार करना चाहिए।

Chandran CAKE HOUSE
Established cake, Marriage Cake, Pastries, Dry Fruits, Sweets & Snacks, Confectionary, Available Pine

Sadar Bazar, Sirsa (Hry.) Ph. 01666-230622, 98962-66661

जल-विद्युत बचत

पानी नहीं तो पिछागे क्या, चिना पानी पिछागे क्या।

राशि और पानी

ज्योतिष शास्त्र अनुसार भी पानी का जीवन में बहुत महत्व है और अलग अलग राशि वालों को पानी की बचत किस प्रकार प्रभावित करती है आखों इसे जानें।

मेघ— अगर मेघ राशि वाले जल संवय करेंगे तो मन की प्रसन्नता बढ़ेगी। माता के स्वास्थ्य में सुधार होगा। प्रगति के अहसर मिलेंगे। नया मकान व प्रापटी खरीदने का सौभाग्य प्राप्त होगा। नई गाड़ी लेने की मनोकामना पूर्ण होगी। भौतिक सुखों में लगातार वृद्धि होती है। पानी बचाने के कई अन्य लाभ मिलते हैं।

वृष— राशि वाले जो जल संवय करने से शारीरिक शक्ति में सुधार होता है। सामाजिक क्षेत्र में विस्तार होता है। सर्क सूत्रों के बढने से कारोबारी दशा सुदृढ़ होती है। भाई बहनों में प्रेम बढ़ता है। शीघ्र विवाह के योग बनते हैं। आय में वृद्धि होती है।

मिथुन— राशि वाले व्यक्ति अगर जल संवय करें तो पैसे का उहसाव बढ़ता है। तबन्नी की विशेष कृपा होती है। चोरी चला गया धन वापस मिलने की संभावना होती है। मान सम्मान में वृद्धि होती है। अपने सीनियर से शाबाशी मिलती है। पदोन्नति शीघ्र होती है।

कर्क— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से आत्मविश्वास मजबूत होता है। तनाव दूर भागता है। दिमागी बोझ कम होकर विवेक जागृत होता है। लोगों से छुटकारा मिलता है। शरीर की कर्माति बढ़ती है। शीघ्र सफलवार मिलती है। गण्य प्रबल होता है। रुके कार्य सम्पन्न होते हैं।

सिंह— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से विदेश यात्रा की वाहत पूर्ण होती है आयात-निर्यात का व्यापार लाभदायक होता है। पैतृक सम्पत्ति का विवाद सुलझता है तथा परिवार में सुख शान्ति का निवास होता है। भाग्य बढ़ता है। **कन्या**— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से आय में विशेष बढ़ौतरी होगी। भाई बहनों से प्यार बढ़ता है। इच्छित कार्यों में सफलता मिलती है, मित्रता बढ़ती है। शरीर स्वस्थ रहता है। पति पत्नी का आपसी प्रेम और मधुर होता है। तलाक तक के मामले से राहत मिलती है।

तुला— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से वाणी में मिठास बढ़ती है। बैंक जमा में वृद्धि होती है। घर में मांगलिक व शुभ कार्यों का आयोजन होता है। गृहस्त्री की गाडी सुचारु रूप से चलती है। विधन-बाधाओं का नाश होता है। व्यापारिक दशा बेहतर होती है। किसी महिला राजनीतिज्ञ की सहायता से कार्य

जल-विद्युत बचत

सम्पन्न होते हैं। यश की प्राप्ति होती है।

वृश्चिक— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से भाग्य उदय होता है। आप अपने को दूसरों से श्रेष्ठ सिद्ध करने में सफल होते हैं। बिना अधिक प्रयास कार्य सिद्ध होते हैं। संतान प्राप्ति की संभावनाएं बढ़ती हैं। यौवनार्ण सुचारु ढंग से कार्यान्वित होती है तथा लाभकारी परिणाम देती हैं।

धनु-राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से मन का चैन मिलता है। ऐश्वर्य की वस्तुएं प्राप्त होती हैं। जमीन जायदाद के कार्यों में लाभ मिलता है। विदेशों से नए व्यापारिक आदेश मिलते हैं। दूर देशों में प्रसिद्धि मिलती है। दुध व जलीय पदार्थों से विशेष तौर पर लाभ मिलता है। छोटे भाई बहनों से सहयोग मिलता है।

मकर— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से पति पत्नी में आपसी विश्वास बढ़ता है। एक दूसरे में आदर करने की भावना बढ़ती है। फिर लम्बित अभिलाषा शीघ्र पूर्ण होती है। यकायक आमदनी में बढ़ोतरी होती है। भिन्न मंडली में रियल्टी मजबूत होते हैं। गले की बिमारियों से राहत मिलती है। छोटे भाई बहनों से सहयोग मिलता है।

कुम्भ— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से सभी प्रकार के विवादों पर पकड़ मजबूत होती है। विरोधी पक्ष कमजोर होकर समझौता करता है। सरकारी अफसर सहयोगी होते हैं। किसी बड़े टेडर में आप बाजी मार लेते हैं। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ती है।

मीन— राशि वाले व्यक्ति द्वारा जल संवय करने से ईश्वरीय कृपा होती है, कष्टों का निवारण होता है। उन्नति शान प्राप्त होती है। नायक का सितारा चमकने लगता है। सन्तान से सहयोग मिलता है। सम्पन्नता बढ़ती है।

- पानी बहा तो पैसा बहा
- जल के लीकेज से हमेशा धन दौलत घर के बाहर जाती है
- पानी को बचाकर आप वरुण देवता का सम्मान करते हैं
- अगर टायलेट में पानी लीक होता है तो योरी तथा मुकदमेबाजी का डर लगा रहता है।
- दक्षिण दिशा में जल का व्यर्थ बहाव स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है।
- छत पर टकी को दक्षिण-पश्चिम में बनाएं। नियमित प्रसिद्धि मिलेगी।
- रसोई में ज्यादा पानी प्रयोग करके आप शारीरिक व मानसिक बिमारियों को दायत देते हैं।
- एक्जुरियम को साफ करते समय कम से कम पानी प्रयोग करें। इससे धन का आना बना रहता है।

जल-विद्युत बचत

20

सरकार के ध्यानार्थ :-

1. अधिक पानी व्यय करने वालों पर अधिक शुल्क लगाया जाए।
2. सर्विस स्टेशन व यावसायिक रूप में अधिक पानी खपत वाले प्रतिष्ठानों को रियाजर्न लगवाना अनिवार्य किया जाए।
3. जल संसंधनों का निजीकरण न होने दिया जाए।
4. स्वास्थ्य के लिए हानिकारक पदार्थों व अधिक जल खपत वाली खेती विशेषकर तम्बाकू व गन्ने के उत्पादन को नियन्त्रित किया जाए।
5. नदी जल के सही प्रयोग को सुनिश्चित किया जाए।
6. वर्षा जल संग्रहण को प्रोत्साहित किया जाए। अधिकधिक तालाब बनवाए जाएं।
7. वर्षा जल को अधिक से अधिक भूमिगत (रियाजर्न) करने की व्यवस्था करें।
8. सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली अपनाने वाले को अनुदान प्रोत्साहन व न अपनाने वाले को हतोत्साहित किया जाए।
9. नलकूप लगाने से पूर्व भूजल विभाग से स्वीकृति अनिवार्य की जाए।
10. खतरनाक जल स्तर वाले क्षेत्र में भूजल दोहन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाया जाए।
11. जन जागरण के लिए जल बचत मेले आयोजित किए जाए और जनता को जल बचत सम्बन्धी पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई जाए।
12. आर्टीमेटिक वाशिंग मशीन में पानी की माईप से कपड़े खंगालने की व्यवस्था को बंद किया जाए।
13. फलश में पानी टकी का साइज निर्धारित किया जाए।



Single Alter 40

आपका दृष्टिमाधुर

SUPAT CATINA-CHEMOK SIRESA ✪ 222411 098965322411

EMPOWER YOUR VISION

यया आप अपने दूर-जदीक के पुराने जमाने के जोड़ वाले चश्मे से परेशान हैं ? तो पेश है नये जमाने के

ESILOR VARILUX PROGRESSIVE GLASSES (FRANCE)

जल-विद्युत बचत

21

विद्युत बचत

विजली प्रकृति देन नहीं है और न ही अथाह मात्रा में उपलब्ध है। धर्मतः प्लांट में विशेष प्रक्रिया से विजली का उत्पादन होता है उसे तुरन्त बढ़ाया नहीं जा सकता परन्तु किसी तकनीकी खराबी के कारण उत्पादन घट या रुक जाता है जिसकी बाद में पूर्ति नहीं की जा सकती इसलिए विजली बचत ही विजली उत्पादन माना जाता है।

‘पानी बचोगा विजली बचेगी’ यह वाक्य कई लोगों को आवश्यकित करता है परन्तु यह तथ्यपरक व वास्तविक है। पानी को एक विशेष प्रक्रिया द्वारा पीने योग्य बनाकर हमारे तक पहुँचाया जाता है। पानी को पीने योग्य बनाने व वितरण प्रक्रिया में बड़ी विद्युत मोटरे चलती हैं और यदि हम पानी के प्रयोग में कमी करेंगे तो निश्चित रूप से सारी प्रक्रिया कम होगी जिसके कारण पानी की मोटरे कम चलेंगी और विजली की खपत कम होगी जिससे हर शहर में हजारों लाखों यूनिट विजली बचेगी। शायद ही ऐसा कोई घर होगा जिसमें पानी की टवी भरने के लिए मोटर न लगी हो। पानी बचत से टकी भरने की प्रक्रिया कम होगी यानि मोटर कम चलानी पड़ेगी जिससे विजली बचत होगी। इसी प्रकार की बचत ही लाखों यूनिट विजली बचा देगी जो हमें अधिक समय आपूर्ति की सुविधा दिलायेगी। इस प्रकार हमारे द्वारा बचाई गई विजली से ट्यूबवैल, कल-कारखाने आदि अधिक देर तक चलेंगे जो देश की समृद्धि के लिए आवश्यक है। आपको अधिक देर सल्टाई मिलेगी जिससे आपको लगना कि विजली उत्पादन बढ़ गया है परन्तु वास्तव में वह आपकी भित्तव्ययता का परिणाम होगा।



हर घर दुकान, भवन में प्रवेश द्वार के साथ बटन लगे होते हैं जिसका एक विशेष अभिप्राय व प्रयोजन है कि आप जब कमरे में प्रवेश करते तो अपनी आवश्यकता अनुसार लाईट पंखा आदि चलाते और जब बाहर निकलते तो बन्द कर दें। आपको यह आदत बनानी है कि जब भी आप कमरे से बाहर निकलते और कमरे में कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है तो विजली बन्द अवश्य करें। आपके इस प्रयास

से विजली बचत होगी जिसके कारण अधिक देर विजली सल्टाई होगी और आपका बिल कम आने से आपको आर्थिक बचत होगी। कुछ समय पहले प्रकाश के लिए बड़े 100-200 वाट के बल्बों का प्रचलन था जिससे विजली खपत अधिक होती थी जिसका स्थान फ्लोरोसेंट ट्यूब ने लिया और आजकल सी एक एल ट्यूब का प्रचलन हो गया है जो 5 वाट से 28 वाट तक उपलब्ध है जिससे विजली खपत बहुत कम होती है और इनका प्रकाश भी अच्छा है। अपने घर, दुकान, कार्यालय, प्रतिष्ठानों पर सी एक एल ट्यूब का प्रयोग ही करना चाहिए।



कुछ लोग शाम ढलते ही घर के सभी कमरों की विजली जला देते हैं चाहे उस कमरे में उसका कोई प्रयोग हो या न हो हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। केवल जहाँ और जब आवश्यकता हो वहाँ लाईट पंखा आदि चलाना चाहिए। सामान्यतः स्नानघर, शौचालय व रसोईघर की विजली 24 घंटे जलती रहती है। वहाँ 5-15 वाट की ट्यूब भी विजली खपत व बिल बढ़ाती हैं। अगर हम केवल आवश्यकता पड़ने पर ही विजली प्रयोग करें तो वर्ष भर में हजारों यूनिट व रूपये की बचत कर सकते हैं।

पानी बचोगा जीवन बचेगा। विजली बचेगी धन बचेगा।

रस्ट्रीट लाईटें विद्युत खर्च का बड़ा मद हैं परन्तु सम्बन्धित व्यक्ति की लापरवाही से प्रातः देर तक जलते रहने से हजारों यूनिट विजली प्रतिदिन अकारण खर्च हो जाती है। सैने सैंकड़ों बार नगर परिषद् अधिकारियों को फोन करके लाईटें बन्द करवाई हैं। सूचना अधिकार में भी कुछ जानकारी मानी परन्तु प्रभाव शून्य। एक मास में नगर परिषद् या अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों के कारण लाखों यूनिट विजली एक प्रांत में बिना आवश्यकता के कार कर दी जाती है और उन पर कोई कार्यवाही नहीं होती। यह विषय बार बार उच्चाधिकारियों के संज्ञान में लाने पर भी नतीजा वही ‘ढाक के तीन पात’। अनावश्यक खर्च का दंडात्मक दायित्व सम्बन्धित कर्मचारी पर होना चाहिए। कुछ व्यापारिक प्रतिष्ठानों के बाहर लगी



तुम आज पानी बचाओगे- पानी कल तुम्हें जीवन देगा।

लाईट प्रातः देर तक जलती रहती हैं जिससे अकारण बिजली खपत के साथ वे अपना बिल भी बढ़ाते हैं।

- सरकारी कार्यालय आरम्भ होते ही सेवादार साहब के कमरे की लाईटें व पंखा तथा गर्मियों में एसी चला देते हैं जबकि अधिकारी कई कई घंटे लेट आते हैं या दिनभर आते ही नहीं और छुट्टी पर होते हैं। दोपहर भोजनावकाश अथवा शाम को छुट्टी के समय बहुत कम अधिकारी व कर्मचारी अपने कमरे की लाईटें पंखा बन्द करते हैं जिसे चौकीदार अपनी सुविधानुसार बन्द करता है या फिर वे चलते रहते हैं और इस कारण हर शहर में प्रति मास लाखों यूनिट विद्युत बर्बाद हो जाती है। अधिकारी स्वयं बिजली चालू करने व बंद करने की आदत बनाएं।
- * भोजनावकाश व छुट्टी के समय कम्प्यूटर को बंद अवश्य करें। बिजली बचत के साथ-साथ रेडिएशन, जो स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है, कम होगा।
- * फ्रिज को बार-बार खोलने व गर्म वस्तुएं रखने से भी बिजली अधिक खर्च होती है।
- * विद्युत बचत संबंधी मान्यता प्राप्त संयंत्र लगाएं।
- * ए.सी. का अधिक प्रयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। कमरा ठंडा होने पर ए.सी. बंद कर दें।
- * शाम को बिजली अंधेरा होने पर ही जलाएं व सुबह जल्दी बंद करें।
- * जिन घरों, दुकानों व प्रतिष्ठानों का निश्चित यूनिट बिल निर्धारित है उनकी मानसिकता बचत करने की नहीं होती क्योंकि निर्धारित राशि का भुगतान करना होता है। ध्यान रखना चाहिए कि राशि से बिजली की बचत अधिक महत्वपूर्ण है।
- * कपड़े वाशिंग मशीन में नहीं बल्कि बाल्टी में खंगालें इससे बिजली व पानी दोनों की बचत होगी।
- * बायो गैस प्रदूति व सौर ऊर्जा प्रदूति अपनाएं जिससे बिजली भी बचेगी और धन भी।
- * फिल्टर, कूलर जाली, ए.सी. जाली की सफाई तथा पंखा ग्रीस आदि अवश्य कराएं।
- * स्तरीय विद्युत संयंत्र तथा कम विद्युत खपत वाले संयंत्र खरीदें जिससे कम बिजली खपत होगी।
- * जिन स्थानों पर ए.सी. व हीटर लगा हो वहां खिड़की दरवाजे खुले न हों और न ही किसी प्रकार से कोई सुराख आदि हो जिससे ठंडक या गर्मी बाहर जा सके।
- * टीवी, कूलर, ए.सी. आदि का प्रयोग न करने के समय मुख्य बटन बंद कर दें। विद्युत बचत आपको धनवान तो नहीं बनाएगी परन्तु खर्च कम करने में सहयोगी रहेगी।

जीवन परिचय



नाम : रमेश गोयल
जन्म : सिरसा 23 अक्टूबर 1948
शिक्षा : कला, वाणिज्य व विधि स्नातक
व्यवसाय : आयकर, धनकर, ट्रस्ट, सोसायटीज
व वैंट सलाहकार

व्यावसायिक संगठन :

- आयकर बार एसोसिएशन सिरसा के संस्थापक सचिव, कई बार सचिव व अध्यक्ष रहे। वर्तमान अध्यक्ष।
- बिक्री कर बार एसोसिएशन सिरसा के सचिव व प्रधान रहे।

सामाजिक संगठन :

- हरियाणा तरुण संघ के उपप्रधान व प्रधान रहे। नगर में सुभाष प्रतिमा लगाने में अहम भूमिका।
- ह.प्रा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के शाखा कोषाध्यक्ष, सचिव, प्रधान व 4 वर्ष प्रांतीय संयुक्त मंत्री रहे। वर्तमान में प्रान्तीय उपाध्यक्ष।
- भारत विकास परिषद् शाखा सिरसा के संस्थापक अध्यक्ष, प्रांतीय उपाध्यक्ष, अध्यक्ष रहे। वर्तमान में केन्द्रीय टीम में क्षेत्रीय संयोजक।
- स्थानीय, प्रादेशिक व राष्ट्र स्तरीय विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के आजीवन सदस्य।

साहित्यिक : कविता, लेख, लघुकथा आदि रचनाएं विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित

विशेष : जल विद्युत बचत अभियान को समर्पित।

संपर्क

20, आर.एस.डी. कालोनी, सिरसा मो. 094160-49757, 092152-20757
फोन/फैक्स 01666-220757 e-mail : rameshgoyalsrs@rediffmail.com